बाल्यावस्था : अर्थ एवं परिभाषा
(Childhood : Meaning and Definition)

भूमिका :- बाल्यावस्था मानव जीवन का वह स्वर्णिम समय है जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है। बाल्यावस्था को मानव विकास की एक प्राकृतिक अवस्था माना जाता है। शैशव अवस्था के बाद 5 से 12 वर्ष तक की अवस्था को बाल्यावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यह अवस्था बालक के व्यक्तित्व के निर्माण की होती है। बालक में इस अवस्था में विभिन्न आदतों, व्यवहार, रुचि एवं इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण होता है।

अर्थ :- बाल्यावस्था को अंग्रेजी में Childhood कहते हैं जो कि दो शब्दों से मिल कर बना है। Child + hood. इसमें Child का अर्थ है 'बालक' एवं hood का अर्थ है 'अवस्था' यानी की बचपन की अवस्था या बालक की एक ऐसी अवस्था जिसमें उसका शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक विकास होता है तथा उसमें मानसिक स्थिरता आती है यह वह अवस्था होती है जिसमें बच्चा अपने वातावरण पर नियंत्रण कर पाना सिखता है।

फ्रायड के अनुसार इस अवस्था में बालक में तनाव की स्थिति समाप्त हो जाती है तथा वह बाहर की दुनिया को समझने लगता है।

Scanned by CamScanner

* परिभाषा :—

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बाल्यावस्था को परिभाषित किया है जो की निम्नलिखित है।

* ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन (Blair, Jones and Simpson) के अनुसार — "बाल्यावस्था वह समय है जब व्यक्ति के आधारभूत, दृष्टिकोणों, मूल्यों और आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण होता है।"

"Childhood is the time when a Person's Basic vision Values and ideals are built to a great extent"

* कोल व ब्रूस (Cole and Bruce) - "बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल कहा है। (Childhood is a Unique period of life)

"वास्तव में माता-पिता के लिए बाल-विकास की इस अवस्था को समझना कठिन है।"

"This is indeed a difficult Period of child development for Parent to Under."

* रौस — बाल्यावस्था को मिथ्या या छद्म परिपक्वता का काल कहा है।

Childhood is a illusion or Pseudo Maturity Period.

Scanned by CamScanner

2021

* सिगमण्ड फ्रायड — बाल्यावस्था को काम की प्रसुप्तावस्था कहा है।
"Childhood is called dormancy stage of work" — Sigmund Freud.

* किलपैट्रिक — "बाल्यावस्था को प्रतिद्वंद्वात्मक समाजिकरण का काल कहा है।"
"Childhood is called a period of dialectical socialization." — Kilpatrick.

* बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएँ
(Chief characteristics of childhood)

बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

(i) शारीरिक व मानसिक स्थिरता
(Physical And Mental Stability)

(ii) मानसिक योग्यताओं में वृद्धि
(Increase in Mental Abilities)

(iii) जिज्ञासा की प्रबलता (forceful curiosity)

(iv) रचनात्मक कार्यों में आनन्द
(Enjoy in creative Activities)

(v) सामाजिक गुणों का विकास
(Development of Social Qualities)

Scanned by CamScanner

(vi) नैतिक गुणों का विकास (Development of Moral Qualities)

(vii) बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास (Development of Extrovert Personality)

(viii) संवेगों का दमन व प्रदर्शन (Suppression and Exposition of Emotions)

(ix) संग्रह करने की प्रवृत्ति (Tendency to Acquisitiveness)

(x) निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति (Tendency to Jaunt without Aim)

(xi) रुचियों में परिवर्तन (change in Interest)

(xii) शब्द भंडार में वृद्धि (Increase in Vocabulary)

(xiii) कल्पना और स्मरण-शक्ति (Imagination and Memory)

(xiv) मित्रों के लिए निष्कपट (Sincere for friends)

(xv) बहादुरी, आत्म-प्रदर्शन तथा नेतृत्व की भावना (Feeling of Bravery, Self-exhibition and Leadership)

Scanned by CamScanner

2021

(xvi) अभिनय और चीजें एकत्रित करने में रुचि (Interest in Acting and collecting Things)

* बाल्यावस्था में शिक्षा (Education in Childhood)

बाल्यावस्था में जो प्रमुख विकास दिखाई देता है उसमें निम्नलिखित पक्ष शामिल होते हैं :—

(1) स्कूल की परिस्थितियों में बच्चे ईर्ष्या का दृष्टिकोण रखते हैं। वे अपनी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से उनकी सफलता पर ईर्ष्या करते हैं।

(2) घर पर भी वे उन छोटे या बड़े भाई-बहनों से ईर्ष्या करते हैं जिनकी तरफ उनके माता-पिता अधिक ध्यान देते हैं।

(3) प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे गर्व अनुभव करते हैं जब वे कोई 'चुटकुला' सुना देते हैं और समूह में उसे सबसे अच्छा 'जोकर' मान लिया जाता है।

(4) उत्तर बाल्यावस्था में बच्चे संकेतों और चिन्हों को समझने लगते हैं।

(5) घरेलू समस्याएँ, बुरा स्वास्थ्य, वास्तविक या काल्पनिक कुंठाएँ आदि भी बालक को प्रभावित करती हैं।

Scanned by CamScanner

अतः इन सभी विकास-क्रियाओं को देखते हुए बाल्यावस्था के दौरान बालकों की शिक्षा के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान देना अति आवश्यक है :—

(1) बालकों के व्यवहारों के प्रति सचेत रहना (Be Careful about the behaviours of the Children) :— बाल्यावस्था में बालक जीवन की वास्तविकताओं को समझना शुरू कर देता है। यह बोध पहले की अपेक्षा इसी अवस्था में अधिक होता है। वह अपने भविष्य के बारे में सोचना शुरु कर देता है तथा एक आदर्श की तलाश में रहता है। यह आदर्श वह अपने पिता, माता, दोस्त या अध्यापक में देखता है। अतः इसका अर्थ यह हुआ कि बड़ों को बालक के व्यवहार के प्रति बहुत ही सावधान रहना चाहिए, ताकि वांछित दिशा में उनके व्यवहारों को विकसित किया जा सके।

(2) प्रवृतियों का विकास - बालकों में प्रवृतियों के विकास के परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक प्रक्रिया में परिवर्तन लाने की आवश्यकता पड़ती है। अतः इस प्रकार की क्रिया को संचालित किया जाना चाहिए जिनसे उनके प्रवृतियों का विकास हो।

Scanned by CamScanner

③. सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण – इस अवस्था में बालक जीवन की वास्तविकताओं में अधिक रुचि रखता है। अतः उसे इस अवधि में सामाजिक विज्ञानों के कुछ पक्षों का अध्ययन भी कराया जाना चाहिए, विशेष कर इतिहास, भूगोल तथा सामाजिक अध्ययन।

④ मानसिक व्यायाम – शैशवावस्था के दौरान शिशुओं में पढ़ने, लिखने और गणित विषय के प्रति ज्यादा ध्यान देने की जरुरत होती है। इससे बच्चों को उचित मानसिक व्यायाम करने का अवसर मिल जाता है।

⑤ लेखन शक्ति का बिकास – इस काल में बच्चों के लेखन कौशल पर बिशेष रूप से ध्यान देने की जरुरत होती है। जिससे की उनमें लेखन शक्ति का बिकास हो सके।

⑥ सहगामी क्रियाएँ (Co-Curricular Activities) – इस अवस्था में बच्चों के सर्वांगीण बिकास के लिए सहगामी क्रियाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए इससे बच्चों में रचनात्मकता और आत्म-प्रदर्शन की प्रवृत्ति का बिकास होगा।

⑦. बिषयों का चयन – इस अवस्था में बालकों के लिए कुछ ऐसे बिषयों का अध्ययन आवश्यक है जो उनकी

Scanned by CamScanner

आवश्यकताओं को पूरा करते हों तथा भविष्य में उनके लिए लाभप्रद हों। कुछ प्रमुख विषयों में भाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन, ड्राइंग, विज्ञान, चित्रकला इत्यादि

(8) **शिक्षण विधियाँ** — इस अवस्था में बच्चों के रुचियों में निरंतर परिवर्तन आता रहता है अतः बच्चों का शिक्षण कार्य उनके रुचियों को ध्यान में रखकर करना चाहिए क्योंकि बच्चों के रुचियों के विरुद्ध शिक्षण बच्चों के मानसिक विकास को अवरुद्ध कर देता है।

(9) **गुणों का विकास** — इस आयु-वर्ग के बच्चों में विभिन्न गुणों का विकास किया जाना चाहिए जैसे - प्रेम, सहयोग, अनुशासन, ईमानदारी, आत्म-निर्भरता आदि। स्कूल के अंदर ऐसे माहौल का निर्माण करना चाहिए जिससे की बच्चों में गुणात्मक विकास हो।

(10) **अध्यापक और आदर्श** — बच्चे अपने अध्यापक को आदर्श मानकर उनका अनुकरण करते है इसलिए अध्यापक को संवेगात्मक रूप से संगठित और नियंत्रित आदर्श के रूप बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत होना चाहिए ताकि बच्चे भी उसी रूप का अनुकरण कर सके।

(11) **रोचक सामग्री** — इस अवस्था के दौरान बालकों में विभिन्न रुचियाँ होती है लेकिन वह परिवर्तनशील होती है। इस आयु-वर्ग के बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत की जाने वाली विषय सामग्री उनकी रुचियों के अनुसार रोचक होनी चाहिए।

Scanned by CamScanner